Office Of The sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-9815494687, E-Mail : ansarullah@qadian.in

सारांश खुत्बः जुमः सय्यदना ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसृहिल अज़ीज़ दिनांक 05.07.2019
मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद टिल्फ़ोर्ड, ब्रतानिया।

हर अहमदी को सदैव याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे की पीछे अहमदियत का चेहरा है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है
अतः हर अहमदी का दायित्व है कि इन चेहरों की रक्षा करे और जिनको अल्लाह तआला ने दीन की सेवा का सामर्थ्य प्रदान किया है उनका अधिक कर्त्तव्य है कि इस दायित्व को निभाएँ तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस उपदेश को सदैव सम्मुख रखें कि हमारी बैअत का दावा करके फिर हमें बदनाम न करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला के फ़ज़्लों तथा उसके इनामों में से जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर मिले, एक बहुत बड़ा फ़ज़्ल तथा पुरस्कार हमें जलसा सालाना के रूप में मिल रहा है ताकि हम अपने रूहानी और शिष्टाचारी तथा ज्ञान सम्बंधी सुधार के लिए प्रयास कर सकें। अल्लाह तआला की निकटता प्राप्त करने और तक़्वा में बढ़ने के सामान कर सकें। एक दूसरे के अधिकारों का निर्वाह करने के लिए अपने दिलों को साफ़ करें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसे की स्थापना के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास कर सकें। आपस में द्वेष तथा दूरियों को सन्धि और निकटता में बदलने का प्रयास करें। अपने आपको व्यर्थ की बातों से पाक करने की कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ये बातें जलसे के आयोजन के विषय में बयान फ़रमाई हैं। अतः हर व्यक्ति को जो जलसे में शामिल हो रहा है, पुरुष है अथवा स्त्री इस बात को अपने सम्मुख रखना चाहिए कि क्या वह ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए प्रयासरत है तथा इस नीयत से जलसे में शामिल हुआ है? तक़्वा में बढ़ने का प्रयास कर रहा है, उच्च आचरण को अभिव्यक्त करते हुए एक दूसरे के हक़ अदा करने का प्रयास कर रहा है, अथवा इस सोच के साथ यहाँ आया है? अतः इसके लिए हमें कुछ प्रयत्न करने होंगे ताकि उन समस्त बातों की प्राप्ति सम्भव हो और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हम धारण करने वाले हों, और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जलसे पर आने वालों के लिए की गई दुआओं के भी अधिकारी बनें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं कदापि नहीं चाहता कि वर्तमान पीरज़ादों की तरह केवल प्रत्यक्ष शान दिखाने के लिए अपनी बैअत करने वालों को एकत्र करूँ बल्कि वह मूल बात जिसके लिए मैं प्रयत्न करता हूँ, अल्लाह के प्राणियां में सुधार है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः हमें इस बातों पर विचार करना चाहिए। कुछ दिन पहले रमज़ान समाप्त हुआ है जो एक आध्यात्मिक सुधार और उन्नति का महीना था जिसमें व्यक्तिगत इबादतें और रोज़े तथा अल्लाह की स्तुति का अवसर प्रत्येक मोमिन को मिला तथा एक अन्य तीन दिन का कैम्प है जिसमें ज्ञान सम्बंधी तथा दीन के ज्ञान के अवसरां के साथ इबादतों और ज़िक्र-ए-इलाही का वातावरण है यदि हम इससे लाभ न प्राप्त करें तो फिर और किस तरह उठाएँगे।

अतः एक अत्यंत भारी दायित्व हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम पर डाला है तथा अपने मानने वालों से बड़ी आशाएँ बाँधी हैं। इस वातावरण का वास्तविक लाभ तभी होगा जब दुनिया की मुहब्बत अल्लाह

तआला तथा उसके रसूल की मुहब्बत की तुलना में ठंडी हो जाएगी। दुनिया में रहते हुए दुनिया की मुहब्बत को ख़ुदा और उसके रसूल की मुहब्बत की तुलना में द्वित्तीय स्थान देना यह बहुत बड़ी बात है और यही चीज़ है जो वास्तविक मोमिन बनाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

ख़ुदा तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा है तो इसका उद्देश्य यही रखा है कि वह वास्तविक मअरिफ़त जो दुनिया से ओझल हो गई थी उसे दोबारा क़ायम करे। फिर आप एक अवसर पर हमें अपने तक़्वा के स्तर को बुलन्द करने का सदुपदेश देते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ वे तमाम लोगो जो अपने आपको मेरी जमाअत मानते हो आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत समझे जाओगे जब सच मुच तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे।

फिर एक स्थान पर अल्लाह तआला की महानता तथा प्रेम दिलों में पैदा करन की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की महानता दिलों में बिठाओ तथा उसकी तौहीद का इक़रार न केवल ज़बानी बल्कि व्यवहारिक रूप में करो ता ख़ुदा भी व्यवहारिक रूप से अपना स्नेह और उपकार तुम पर प्रकट करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- किसी एक नेकी पर चलना तक़्वा नहीं अपितु हर प्रकार की नेकियाँ बजा लाना ख़ुदा तआला तथा उसके बन्दों के हर प्रकार के अधिकारों का निर्वाह करना वास्तविक तक़्वा है। कुछ लोग बाहर के जमाअती कामों में अच्छे हैं तो घरों में बीवी बच्चे उनसे तंग आए हुए हैं। कुछ लोग घरों के हक़ अदा कर रहे हैं तो अल्लाह तआला के हक़ और उसकी इबादत की ओर ध्यान नहीं है। कुछ प्रत्यक्षतः इबादत करने वाले हैं तो समाज के आपस के मामलों में एक दूसरे का हक़ मारने वाले हैं। अतः अल्लाह तआला के स्नेह और उपकार को प्राप्त करने के लिए हर एक दिशा और हर एक पहलू से अपनी क्रिया शील हालतों का सुधार करने की आवश्यकता है तथा ये जलसे के आयोजन इसी उद्देश्य के लिए किए गए हैं कि नेकियों की अदायगी की ओर ध्यान आकर्षित हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

याद रखो वास्तविक बन्दे अल्लाह तआला के वही होते हैं जिनके विषय में फ़रमाया है कि- لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَن ذِكْرِ اللَّهِ अर्थात जिन्हें न कोई व्यापार, न क्रय विक्रय अल्लाह की स्तुति से ग़ाफ़िल रखती है। फ़रमाया कि जब दिल ख़ुदा के साथ सच्चा सम्बंध जोड़ लेता है तो वह उससे अलग होता ही नहीं है। जैसे किसी का बच्चा बीमार हो तो चाहे वह कहीं जावे किसी काम में व्यस्त हो किन्तु उसका दिल और ध्यान उस बच्चे में रहेगा। इस प्रकार से जो लोग ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बंध और स्नेह पैदा करते हैं वे किसी अवस्था में भी ख़ुदा तआला को नहीं भूलते। अतः यह वह अवस्था है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हममें देखना चाहते हैं तथा इस अवस्था के पैदा करने की कोशिश के लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं। हममें से प्रत्येक को प्रयास करना चाहिए तथा ख़ुदा तआला से दुआ भी करनी चाहिए कि हम इस अवस्था को प्राप्त करने वाले बन सकें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जलसे में आने वाले तथा ड्यूटियाँ देने वाले इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही से अपनी ज़बानों को तर रखने का प्रयास करें तथा ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने वाले बनें। इससे बड़ी और क्या बात हमारे लिए होगी कि अल्लाह तआला हमें याद रखे अतः इसकी प्राप्ति के लिए हमें प्रयास करना चाहिए और तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशानुसार आसमान पर आपकी जमाअत में गिने जाएँगे। इन दिनों में हमें यह दुआ करनी चाहिए कि हम उन लोगों में न गिने जाएँ जिनसे ख़ुदा तआला प्रसन्न नहीं बल्कि उन लोगों में शामिल हों जिनका वर्णन ख़ुदा तआला फ़रमाता है, ख़ुदा तआला से हम दृढ़ सम्बंध जोड़ने वाले हों, अपने दिलों के अंधेरों को मिटाने वाले हों। यहाँ जलसे की कार्यवाही के समय भी तथा अंतराल में भी और रात को भी अल्लाह की स्तुति के साथ ये दुआएँ मांगें तथा संकल्प करें कि ऐ ख़ुदा, हम नेक नीयत होकर तेरे मसीह द्वारा जारी किए हुए इस जलसे में शामिल हुए जो निःसन्देह तेरे विशेष समर्थन तथा ज्ञान से जारी हुआ, इसमें तेरी प्रसन्नता प्राप्ति और तेरे

ज़िक्र में बढ़ने और तेरे स्नेह की प्राप्ति क लिए शामिल हुए हैं। अपनी उन समस्त बरकतां से हमें लाभ प्रदान फ़रमा जो तू ने इस जलसे से सम्बद्ध की हैं और हमारे अन्दर वे पाक बदलाव पैदा फ़रमा जो तू चाहता है और जिसको क़ायम करने के लिए तू ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम को इस ज़माने में भेजा है ताकि उनकी बैअत में वास्तविक रंग में शामिल होने वाले बन सकें। अतः जब हम अल्लाह तआला से सहायता मांगते हुए तथा दरूद व इस्तिग़फ़ार करते हुए ये दिन व्यतीत करेंगे, अपने दिनों को केवल अल्लाह तआला के लिए व्यतीत करेंगे तो हमारी इबादतों के स्तर भी बुलन्द होंगे और अल्लाह तआला से सम्बंध के कारण अल्लाह तआला के प्राणियों के हक़ अदा करने वाले भी हम बनेंगे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इन दिनों को आपस के द्वेष दूर करने का माध्यम भी बनाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा सालाना को भी अल्लाह की निशानियों में दाख़िल फ़रमाया है जो लोग अल्लाह की निशानियों को हानि पहुंचाते हैं वे अल्लाह तआला के प्रकोप के नीचे आते हैं। अतः बड़े भय का अवसर है, जिनके मतभेद हैं उनको चाहिए कि तुरन्त एक दूसरे के लिए सन्धि का हाथ बढ़ाएँ तथा ऐसा वातावरण पैदा करें जहाँ अहंकार के ख़ोलों में बन्द होने के बजाए और ईर्षा की आग में जलने के बजाए सलामतो और सन्धि का सुन्दर वातावरण पदा करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस उपदेश को सदैव अपने सामने रखना चाहिए कि मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से किसी को कष्ट न पहुंचे। हमें समीक्षा करनी चाहिए कि यह उपदेश हमारी अवस्थाओं का चित्रण करता है। मुझे बड़े खेद के साथ यह भी कहना पड़ रहा है कि कुछ लोग जलसों पर आते हैं और तनिक तनिक सी बात पर पुराने द्वेषों तथा मतभेदों के कारण जलसों के दिनों में इस वातावरण में भी लड़ाई झगड़ा कर बैठते हैं। कई बार पुलिस को भी बुलाना पड़ता है, क्या यह एक मोमिन की शान है? क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने वालों के ऐसे कर्म हैं? निःसन्देह नहीं। ऐसे लोगों को जमाअत के निज़ाम से यदि बाहर निकालें अथवा न निकाल अपने कर्म के कारण अल्लाह तआला की दृष्टि में वे जमाअत से बाहर निकल जाते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के अनुसार वे आसमान पर आपकी जमाअत में शामिल नहीं हैं। इसी प्रकार ओहदेदार हैं और जलसे की ड्यूटी देने वाले हैं वे भो इन दिनों में विशेष ध्यान रखें कि उनके शिष्टाचार के स्तर अत्यधिक उच्च होने चाहिएँ। ओहदेदारों की यह विशेष ज़िम्मेदारी है कि उनमें सहन शक्ति अधिक होनी चाहिए। अतः ओहदेदार अपने आपको हर हाल में सेवक समझें तथा जमाअत के लोगों तथा जलसे में शामिल होने वाले ओहदेदारों को जमाअत के निज़ाम का पतिनिधि समझें तो तभी खिंचाव तथा लड़ाईयों की स्थिति में सुधार आ सकता है, आपस के मतभेद दूर हो सकते हैं। सदैव याद रखना चाहिए कि असल चीज़ ओहदा नहीं बल्कि असल चीज़ अपनी बैअत के हक़ को अदा करना है। चाहे वह ओहदेदार है या जमाअत का एक व्यक्ति है उसे इस हक़ को अदा करने का प्रयास करना चाहिए और इस हक़ की अदायगी के बारे में नसीहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं-

ऐ मेरी जमाअत, ख़ुदा तआला आप लोगों के साथ है और क़ादिर-ए-करीम आप लोगों को अन्तिम यात्रा के लिए ऐसा तय्यार करे जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी तय्यार किए गए थे। धिक्कार वाला है वह जीवन जो केवल संसार के लिए है और दुर्भागय शाली है वह जिसकी समस्त चिंताएँ तथा गतिविधियाँ दुनिया के लिए हैं। ऐसा इंसान यदि मेरी जमाअत में है तो वह बेकार ही अपने आपको मेरी जमाअत में दाख़िल करता है क्यूँकि वह उस शुष्क टहनी की भांति है जो फल नहीं लाएगी। फिर फ़रमाया, ऐ नेक लोगो, तुम ज़ोर के साथ इस शिक्षा में दाख़िल हो जो तुम्हारी मुक्ति के लिए मुझे दी गई है। तुम ख़ुदा का एक अकेला समझो और उसके साथ किसी चीज़ को शामिल न करो, न आसमान में न ज़मीन में। ख़ुदा साधन के उपयोग से तुम्हें मना नहीं करता किन्तु जो व्यक्ति ख़ुदा को छोड़ कर साधन पर ही भरोसा करता है वह मुशरिक है। कदीम से ख़ुदा कहता चला आया है कि

पाक दिल बनने के अतिरिक्त मुक्ति नहीं, सो तुम पाक दिल बन जाओ तथा संकीर्ण मनोवृत्तियों और क्रोधों से अलग हो जाओ। ख़ुदा तआला के प्रति दायित्वों को दिली ख़ौफ़ से बजा लाओ कि तुम इनके विषय में पूछे जाओगे। नमाज़ों में बहुत दुआ करो कि ता ख़ुदा तुम्हं अपनी ओर खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे क्यूँकि इंसान कमज़ोर है। प्रत्येक बदी जो दूर होती है वह ख़ुदा तआला की शक्ति से दूर होती है और जब इंसान ख़ुदा से शक्ति न पावे, किसो बदी के दूर करने पर समर्थ नहीं हो सकता। इस्लाम केवल यह नहीं है कि रस्म के रूप में अपने आपको कलिमा पढ़ने वाला कहलाओ बल्कि इस्लाम की वास्तविकता यह है कि तुम्हारी आत्माएँ ख़ुदा तआला की चौखट पर गिर जाएँ और ख़ुदा तआला तथा उसके आदेश हर प्रकार से तुम्हारी दुनिया पर तुम्हारे लिए प्राथमिक हो जाएँ।

अतः यह वह स्तर है जिस पर हममें से प्रत्येक को पूरा उतरने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक अहमदी को सदैव याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे के पीछे अहमदियत का चेहरा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है, इस्लाम का चेहरा है। अतः प्रत्येक अहमदी का दायित्व है कि इन चेहरों की रक्षा करे और जिनको अल्लाह तआला ने सेवा का अवसर दिया है उनका अधिक दायित्व है कि इस कर्त्तव्य को निभाएँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को सदैव सम्मुख रखें कि हमारी बैअत का दावा करके फिर हमें बदनाम न करें। अतः इस इरशाद को सदैव अपने सामने रखना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ इस समय मैं पेश करता हूँ जिससे आपकी चिंता प्रकट होती है जो आपके दिल में अपने मानने वालों के लिए है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं दुआ करता हूँ और जब तक मुझ में जीवन की शक्ति है किए जाऊँगा और दुआ यही है कि ख़ुदा तआला मेरी इस जमाअत के दिलां को पाक करे और अपनी रहमत का हाथ लम्बा करके उनके दिल अपनी ओर फेर दे और समस्त शरारतें और द्वेष उनके दिलों से उठा दे तथा आपस का सच्चा प्रेम अता कर दे और मैं विश्वास रखता हूँ कि यह दुआ किसी समय क़बूल होगी और ख़ुदा मेरी दुआओं को नष्ट नहीं करेगा।

अल्लाह तआला से हमें यह दुआ करनी चाहिए कि यह दुआ हमारे हक़ में पूरी हो, हमारी पीढ़ियों के हक़ में पूरी हो तथा क़यामत तक हमारी नस्लें भी इस दुआ का लाभ उठाती चली जाएँ। इस दुआ के अगले भाग में आपने यह दुआ भी की है, आपने फ़रमाया कि हाँ मैं यह भी दुआ करता हूँ कि यदि कोई व्यक्ति मेरी जमाअत में ख़ुदा तआला के ज्ञान और इरादे में अनादि काल से अभागा है, जिसके भाग्य में ही नहीं कि शुद्ध पवित्रता तथा ख़ुदा तरसी उसे प्राप्त हो तो उसको ऐ सर्वशक्ति वाले ख़ुदा, मेरी ओर से विमुख कर दे जैसा कि वह तेरी ओर से विमुख है तथा उसके स्थान पर कोई और ला, उसके स्थान पर कोई और ला जिसका दिल नर्म तथा जिसकी जान में तेरी तलब हो।

अल्लाह तआला हमें ऐसी दशा से बचाए जिसमें हम ख़ुदा तआला तथा उसके द्वारा भेजे गए से विमुख होने वाले हों। हमारे ईमानों को सदैव सलमात रखे अपितु उसमें वृद्धि करता चला जाए और हम उन समस्त दुआओं के प्राप्त करने बनें जो आपने अपने मानने वालों के लिए और उनके हक़ में की हैं।

जलसे के बरकत पूर्ण होने तथा हर प्रकार के गतिरोध से सुरक्षित रहने के लिए भी दुआएँ करते रहें। इन दिनों में और भी सावधान रहें, दाएँ बाएँ नज़र भी रखें। अल्लाह तआला हर शरीर की शरारत से और हर ईर्षालु की ईर्षा से हमें बचाता रहे।

(ख़ुत्बः जुम्अः के अनुवाद को अधिक सुन्दर एवं सुगम बनाने के लिए सुझाव का स्वागत है। अनुवादक-9781831652)